उत्थिष्ठ कौंतेय! युद्धाय कृत निश्चयः।।

भगवदगीता ज्ञान का भण्डार है। इसमें जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में पड़े मनुष्य के लिए अनुकूल ज्ञान मिलता है।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि युद्ध का समय आने पर कृतनिश्चय होकर युद्ध करो युद्ध काम्य नहीं है, मानव को युद्ध नहीं, शांति की जरूरत है पर युद्ध आ ही जाए तो पीठ नहीं दिखाना है। मनुष्य को तलवार के खेल में एक दूसरे से होड़ नहीं करनी चाहिए, होड़ तो खेलों में ही भली। रणरंग नहीं चाहिए, क्रीड़ा और नाटक मे रंग चाहिए परंतु युद्ध अनिवार्य ही हो जाए तो फिर हिम्मत से युद्ध करना है।

जब संधि प्रस्ताव विफल हो जाएँ तब युद्ध की शरण लेनी चाहिए। ऐसी स्थिति में युद्ध ही कर्त्तव्य हो जाता है। मानव जाति अब पुराने उपदेशों से ऊब गई है। मूढ़ता को दूर करने के लिए ध्यान के जवाबों को तैयार कर रही है। नव्य ध्यान युग का श्री गणेश हो रहा है।

पिरामिड पार्टी ज्ञानशंख को बजा रही है। ध्यानकी गर्जना हो रही है। अब संसार का समस्त अधिकार सिर्फ़ आत्मज्ञानियों का है। देह भ्रांति में रहने वाले मूर्ख ज्ञानियों के साथ आत्मज्ञानी काम नहीं करते।

षट्वर्गो के अधीन रहने वाली अल्पात्माओं का महान लोग आदर नहीं करते। सिंहासन से आत्मज्ञान रहित लोगों को, अल्पात्माओं को उतरना ही है। धनवान या अनपढ़ लोगों को सिंहासन नहीं मिलता, गुरु और ध्यानी को ही मिल सकता है। ज्ञान सुकरात या श्री राम जैसे ज्ञानियों को ही मिलता है।

सभी ध्यानियेां को उठना चाहिए। रामराज्य स्थापना नामक युद्ध के लिए तैयार होना चाहिए।युद्ध में विजय प्राप्त करना है। इस युद्ध में यदि मरेंगे तो वीर को स्वर्ग मिलेगा और यदि विजय होती है तो सारा भूमण्डल हमारा ही है।